# पोंगल- पोली

मृदुला गर्ग

# पोंगल-पोली

कहानी

**मृदुला गर्ग**

आइहोले के खण्डहर मन्दिरों के बीच बने ताल से सोनम्मा पानी भर रही थी कि उसने देखा, वही कल वाले लोग आज फिर आये हैं। वही लम्बी काली गाड़ी। देखते ही उसका छोटा भाई फ़कीरप्पा अपने साथी बेरू और शाँतम्मा के साथ गाड़ी को घेर कर खड़ा हो गया। आज फ़कीरप्पा और बेरू, दोनों में से कोई स्कूल नहीं गया था, शायद इन्हीं लोगों के आने की आस में।

सोनम्मा साँस रोक कर स्त्री के बाहर निकलने की प्रतीक्षा करने लगी। लकदक सफ़ेद पोशाक पहने एक आदमी कूद कर गाड़ी से उतरा और फुर्ती से पीछे का द्वार खोल खड़ा हो गया। वह उतर आयी। वही गले में सोने का भारी हार, हाथों में सोने की ढेर सारी चूड़ियाँ, टोकरी भर काले केश सिर पर और....उसकी साड़ी इतनी महीन जैसे हवा में उड़ता वर्षा ऋतु का पहला बादल। साथ ही पुरुष भी उतर आया, हाथ में वही कल वाला डिब्बा लिये। क्या अजीब कपड़े पहनता है। रंग-बिरंगी क़मीज़ और कसी -कसी वह क्या कहते हैं, पतलून। हँसी आती है।

वे दोनों हँस-हँस कर आपस में बातें कर रहे थे और सोनम्मा थी कि उधर से आँखें नहीं हटा पा रही थी।

कल आये थे तो सब मन्दिरों में घूमे थे पर जैसे और यात्री घूमते हैं वैसे नहीं। ये तो हर मूर्ति के आगे साँस रोक कर खड़े हो जाते थे और आदमी डिब्बा आँखों से लगा लेता था। उसका मन हो आया था, वह भी एक बार उसमें से देखे। उसमें सनीमा दिखता है क्या ? एक बार मेले में देखा था, कैसे बोलता था दिखलाने वाला-आगरे का ताजमहल देखो। बारह मन की धोबिन देखो। आइयो ! कितना मज़ा आया था।

पर फ़कीरप्पा कहता है, यह सनीमा नहीं, कैमरा है कैमरा। बटन दबाते ही फोटू खिंच जाता है। फ़कीरप्पा स्कूल में क्या पढ़ता है, अपने को बश्वेश्वर का अवतार समझने लगा है। संसार में जैसे कुछ हुई नहीं जो ये न जानता हो।

कल सारी सुबह सोनम्मा उनके पीछे फिरती रही थी और जब सूरज चढ़ने पर उन्होंने दुर्गा मन्दिर के अहाते में बैठ कर टोकरी खोली तो, शिव रे, उसके मुँह में इत्ता पानी आया, इत्ता पानी आया कि थूकना कठिन हो गया, क्या-क्या सामान था उसमें ! दही भात, इमली भात, पोंगल। पूरी, आलू भाजी और सफ़ेद वह जो होती है। उसने बाज़ार में देखी कई बार है पर खायी कभी नहीं। क्या नाम है उसका; बरेड; हाँ, बरेड। और भी जाने क्या-क्या।